भारतवर्ष की अवधारणा (Concept of Bharatvarsha)

1. परिचय और नामकरण

- **अखंड भूमि:** प्राचीन भारत के कवियों, दार्शनिकों और ग्रंथकारों ने इस पूरे देश की कल्पना हमेशा एक 'अखंड इकाई' के रूप में की है। हिमालय से लेकर समुद्र तक फैली इस भूमि को एक सार्वभौमिक राजा द्वारा शासित क्षेत्र माना गया है।
- **नाम की उत्पत्ति (भारतवर्ष):** इस विशाल उपखंड को 'भरत' नाम के एक प्राचीन कुल के आधार पर **भारतवर्ष** (भरत का देश) कहा गया और यहाँ के निवासियों को **'भरतसंतति'** माना गया। पुराणों के अनुसार, दुष्यंत और शकुंतला के पुत्र राजा भरत के नाम पर यह नाम पड़ा।
- **भौगोलिक विस्तार:** उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में समुद्र (कन्याकुमारी) तक और पूर्व में ब्रह्मपुत्र घाटी से लेकर पश्चिम में सिंधु घाटी तक फैले क्षेत्र को प्राचीन काल से एक सार्वभौमिक राजा द्वारा शासित क्षेत्र माना गया है। ऐसे राजाओं को **'चक्रवर्तिन्'** की उपाधि दी जाती थी।

2. राजनीतिक एकता का इतिहास

- **अखंडता के प्रयास:** प्राचीन काल में देश में राजनीतिक एकता को कम से कम दो बार पूरी तरह स्थापित होते देखा गया:
  1. ईसा पूर्व तीसरी सदी में सम्राट अशोक का साम्राज्य दक्षिण भारत को छोड़कर पूरे देश में फैला था।
  2. ईसा की चौथी सदी में समुद्रगुप्त की विजय सेना गंगा की घाटी से लेकर तमिल देश की सीमाओं तक पहुँच गई थी।
  3. सातवीं सदी में चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्धन को हराया था, जिसे उत्तर भारत का अधिपति माना जाता था।
- **राजनीतिक संरचना:** भले ही देश छोटे-छोटे राज्यों में बंटा रहा हो, लेकिन विजेताओं और सांस्कृतिक नेताओं ने हमेशा भारत को एक भौगोलिक इकाई माना।

3. भाषा और संस्कृति की एकता

- **भाषा का विकास:** ईसा पूर्व तीसरी सदी में देश की आम भाषा **प्राकृत** थी (अशोक के शिलालेख प्राकृत में हैं)। बाद में **संस्कृत** का विस्तार हुआ। गुप्त काल के बाद राजनीतिक रूप से देश बंटा हुआ था, लेकिन सरकारी और धार्मिक दस्तावेज संस्कृत में ही लिखे जाते थे।
- **सांस्कृतिक महाकाव्य:** रामायण और महाभारत का पठन-पाठन दक्षिण में तमिल देश से लेकर उत्तर में तक्षशिला और वाराणसी तक एक जैसी श्रद्धा के साथ होता था। क्षेत्रीय भाषाएं अलग थीं, लेकिन सबका मूल सांस्कृतिक सार एक ही था।
- **पौराणिक दृष्टिकोण:** पुराणों में ब्रह्मांड की परिकल्पना और जंबूद्वीप का वर्णन मिलता है, जिसके केंद्र और दक्षिण भाग में भारतवर्ष स्थित है।

4. भारतीय उपमहाद्वीप की भौगोलिक विशेषताएँ

- **सीमाएँ:** भारत एक स्पष्ट भौगोलिक इकाई है जो उत्तर में हिमालय और बाकी तीन दिशाओं से समुद्र से घिरा है।
- **दर्रे और आवागमन:** उत्तर-पश्चिम में खैबर, बोलन और गोमल जैसे दर्रों के जरिए प्राचीन काल से मध्य एशिया, ईरान और अफगानिस्तान के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक संबंध बने रहे। इन रास्तों से हमलावर और प्रवासी भी भारत आए, फिर भी हिमालय और हिंदूकुश पर्वत देश की सांस्कृतिक पहचान को रोक नहीं पाए।
- **नदियाँ और बस्तियाँ:** भारत का मध्य भाग महत्वपूर्ण नदियों (गंगा, यमुना, ब्रह्मपुत्र आदि) से सींचा गया है। शुरुआती बस्तियाँ जंगलों को काटकर बसाई गईं। लोहे के औजारों के विकास से जंगलों को साफ करना आसान हुआ, जिससे गंगा-सिंधु के मैदानों में खेती और बस्तियों का तेजी से विस्तार हुआ।

5. 'इंडिया', 'हिंदू' और 'हिंदुस्तान' शब्दों का उद्भव

- **सिंध नदी का प्रभाव:** बाहर से आने वाले लोगों (यूनानी, ईरानी, चीनी) के संपर्क से इन शब्दों की शुरुआत हुई क्योंकि वे सबसे पहले सिंधु नदी के संपर्क में आए थे:
  - **चीन और यूनान:** प्राचीन चीनी स्रोतों में इसे 'शेन तू' और ग्रीक ग्रंथों में **'इंडिया'** कहा गया। मेगस्थनीज ने संपूर्ण उपमहाद्वीप के लिए 'इंडिया' शब्द का प्रयोग किया।
  - **फारस और अरब:** फारसी अभिलेखों में 'हिंदू' शब्द का प्रयोग हुआ। अरब और ईरान के स्रोतों में भारत की पूरी भूमि के लिए **'हिंदुस्तान'** और यहाँ के निवासियों के लिए **'हिंदू'** शब्द का इस्तेमाल किया गया।
- **विस्तार:** शुरुआत में ये नाम सिर्फ सिंधु नदी के आसपास के क्षेत्र के लिए थे, लेकिन समय के साथ पूरे भारतीय उपमहाद्वीप के लिए प्रयुक्त होने लगे।

निष्कर्ष: संक्षेप में कहें तो, भारतवर्ष केवल एक भू-भाग नहीं, बल्कि हिमालय से समुद्र तक फैली एक ऐसी प्राचीन भौगोलिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक इकाई है, जहाँ विभिन्न जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों के मिलने के बावजूद अंतर्निहित एकता हमेशा कायम रही है।